जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम: भोजपुर के किसान श्री सुनील राय की सफलता की प्रेरक कहानी

नाम : सुनील राय

ग्राम : डुमरिया

प्रखंड : कोईलवर

जिला: भोजपुर

राज्य: बिहार

उम्र : 32

शिक्षा : नौवीं पास

भूमि जोत: 10 एकड़

श्री सुनील राय पिता का नाम श्री वीरेंद्र राय बिहार के भोजपुर जिले के पोस्ट बिशुनपुरा गांव डुमरिया के रहने वाले हैं। उन्होंने 10 एकड़ कृषि भूमि पर खेती करके अपनी मेहनत से कृषि के क्षेत्र में एक नई दिशा दिखाई है। प्रारंभ में, श्री राय पारंपरिक तरीकों का पालन करते हुए धान, गेहूं और मसूर की खेती करते थे, लेकिन समय के साथ उन्हें यह समझ में आ गया कि पारंपरिक पद्धतियों से खेती में कई समस्याएं आ रही हैं। विशेषकर, गेहूं की बाढ़/ पारंपरिक सिंचाई प्रणाली के कारण बहुत से पौधे नष्ट हो जाते थे, जिससे उत्पादन कम हो जाता था।

अधुनिक तकनीकों का स्वागत भोजपुर कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों की मदद से श्री राय ने अपनी खेती में बदलाव लाना शुरू किया। उन्होंने धान की सीधी बुआई की खेती अपनाई, जिससे न केवल खेती की लागत कम हुई, बल्कि उत्पादन में भी वृद्धि हुई। इसके बाद, उन्होंने गेहूं में शून्य जुताई विधि को अपनाया, जिससे गेहूं की बुआई में समय और लागत की बचत हुई और उत्पादन में वृद्धि भी देखने को मिली। उन्होंने धान की कटाई के एक सप्ताह बाद गेहूं की बुआई की, जिससे भूमि की नमी का भरपूर उपयोग हुआ और अंकुरण दर 90-95% तक पहुंच गई। नवप्रवर्तन का सफल प्रयोग श्री सुनील राय ने अपने खेत में हैप्पी सीडर का प्रयोग भी किया, जिससे फसल की रोपाई में और भी सुधार हुआ। धान के डंठल को कुशलता से उपयोग कर, उन्होंने खेत में मिट्टी की उर्वरता और नमी बनाए रखने का काम किया, जो लंबे समय तक फसल की पैदावार में सहायक रहा। उन्होंने फसल विविधता को बढ़ाते हुए चना, मसूर, मक्का, सब्जी मटर और मूंग जैसी फसलें भी उगाई, जिससे उनके खेत में लचीलापन और अधिक मुनाफा दोनों सुनिश्चित हुए।

तालिका: सी.आर.ए. कार्यक्रम से पहले और बाद में किसान की स्थिति

फसल	क्षेत्रफल (एकड़ में)		उत्पादन (क्यू/एकड़)		सकल आय (रु./एकड़)		शुद्ध आय (रु./एकड़)		आधार वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि	
	2019-20	2023-24	2019-20	2023-24	2019-20	2023-24	2019-20	2023-24	उत्पादन	लाभप्रदता
धान	6	8	13.62	18.72	32626	39468	20626	28568	37.45	38.50
गेहूं	8	6	13.10	19.46	29802	47838	19328	32438	48.54	67.82
मसूर	1	2	3.32	4.72	17225	25622	12645	18875	42.16	49.26
गरमा मक्का	-	3	-	19.46	-	43316	-	28716	सी.आर.ए. से पहले इस फसल की खेती नहीं होती थी	100
चना	1	2	4.26	5.52	2200	29220	11085	18155	29.57	63.77
मूंग		3	-	4.82	-	30120	-	19530	सी.आर.ए. से पहले इस फसल की खेती नहीं होती थी	100

जलवायु अनुकूल कृषि (सी.आर.ए.कार्यक्रम) का प्रभाव वर्ष 2020-21 में भोजपुर जिले में शुरू हुए। जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम (सी.आर.ए.) ने श्री राय के लिए एक नई उम्मीद जगाई। इस कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने सीधी बुआई (डी.एस.आर.) की पद्धति को अपनाया और इस बदलाव से न केवल उत्पादन में 37.45% की वृद्धि हुई, बल्कि प्रति एकड़ 28568 रुपये की आय भी प्राप्त हुई। इस सफलता से प्रेरित होकर उन्होंने शून्य जुताई विधि का प्रयोग अपने गेहूं की खेती में भी किया, जिससे गेहूं की उपज में 48.54% की वृद्धि हुई और प्रति एकड़ 32,438 रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हुई। गर्मियों में, जब खेतों को परती छोड़ दिया जाता था और अब श्री यादव ने मूंग की खेती शुरू की और इस खेती को अपना करके अपनाकर प्रति एकड़ 4.82 क्विंटल मूंग का उत्पादन किया, जिससे उन्हें प्रति एकड़ 19530 रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हुई। इस बदलाव से न केवल उनकी आय में वृद्धि हुई, बल्कि मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ।

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम का समग्र प्रभाव हुआ और इस समग्र दृष्टिकोण ने उनकी खेती को जलवायु परिवर्तन के लिए और अधिक लचीला और टिकाऊ बना दिया। उन्होंने जलवायु अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाकर न सिर्फ अपनी आय बढ़ाई, बल्कि अपने खेतों की उर्वरता और पर्यावरणीय संतुलन को भी बनाए रखा। उनके अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया कि जलवायु अनुकूल कृषि से न केवल खेती की लागत कम होती है, बल्कि इससे किसानों के जीवन स्तर

में भी सुधार आता है। आज, श्री सुनील राय की कहानी सिर्फ एक किसान की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि जलवायु अनुकूल कृषि के प्रभाव और किसानों के जीवन में सकारात्मक बदलाव की एक प्रेरणा है। इस कार्यक्रम ने उन्हें न केवल बेहतर खेती के तरीके सिखाए, बल्कि उन्हें अपने परिवार और समाज के लिए एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की दिशा भी दिखाई।

एक्शन फोटो

जल - जीवन - हरियाली
जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम
कृषि विज्ञान केन्द्र, भोजपुर
प्रत्यक्षण
शून्य जुताई विधि द्वारा गेहूँ की खेती
क्रापिंग सीजन : रबी - 2023-24
Latitude: 25.641647
Longitude: 84.724093
Elevation: 55.84±3.48 m
Accuracy: 4.66 m
Time: 20-03-2024 15:20:40
Note: ZT wheat Rabi 2023-24 variety DBW187 Village dumaria Farmer Sunil rai
DoS- 23.11.2023
NoteCam @ iOS

Latitude: 25.641589
Longitude: 84.723530
Elevation: 55.95±3.36 m
Accuracy: 4.75 m
Time: 15-03-2024 15:22:07
Note: Rabi 2023-2024
Adopted cropping system-DSR- ZT wheat- ZT mung
variety DBW 187 Farmer Sunil Yadav dumaria Village dumaria Dos- 20.01.2023
NoteCam @ iOS

जल-जीवन-हरियाली
जलवायु (मौसम) के अनुकूल कृषि कार्यक्रम
हैपी सीडर से चना एवं मटर की
ग्राम – महकमपुर
किस्म : चना – आर.वी.जी. 202
मटर – जी. 10
कृषि विज्ञान केन्द्र,

जल-जीवन-हरियाली
जलवायु (मौसम) के अनुकूल कृषि कार्यक्रम
प्रक्षेत्र दिवस
सत्र : 2021–22 (रबी)
फसल – आलू (यांत्रिक विधि)
किस्म – कुफरी ख्याति
कृषि विज्ञान केन्द्र, मोजपुर